शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ३२ : नई दिल्ली : ३-९ नवम्बर २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता महानगर के राजरहाट स्थित महाश्रमण विहार में प्रवास कर रहे हैं। चतुर्मास अब परिसंपन्नता की ओर है। ५ नवम्बर २०१७ को आचार्यप्रवर यहां से मंगल विहार कर देंगे। बंगाल प्रान्त के बाद आचार्यप्रवर का झारखंड राज्य में प्रवेश होगा। वहां आप सम्मेद शिखर, चास बोकारो और अन्य स्थानों में निर्धारित दिनों तक प्रवास कर ओडिसा की ओर प्रस्थान करेंगे। परमाराध्य आचार्यप्रवर १५४वें मर्यादा महोत्सव हेतु २० जनवरी २०१८ को कटक (ओडिसा) में मंगल प्रवेश करेंगे।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कोलकाता में

आचार्य और उपाध्याय के लिए होती हैं विशेष व्यवस्थाएं

२३ अक्टूबर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने ठाणं आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संगठन में प्रमुख व्यक्तियों की अपेक्षा रहती है। जैन शासन में कुछ प्रमुख व्यक्तियों का भी व्यवस्थापन है। जैन शासन में आचार्य, उपाध्याय आदि पद हैं। उपाध्याय का कार्य है सूत्र की वाचना देना और आचार्य का कार्य है सूत्र के अर्थ का ज्ञान देना। आचार्य एक महत्त्वपूर्ण पद होता है। आचार्य और उपाध्याय के लिए धर्मसंघ में पांच अतिशेष अर्थात विशेष विधियां होती हैं--

१. उपाश्रय में पैरों की धूलि को यतनापूर्वक (दूसरों पर न गिरे) झाड़ना, प्रमार्जित करना। आचार्य के पावों के रजें लगी हुई हैं तो उन्हें बाहर जाने की जरुरत नहीं, वे प्रवास स्थल (उपाश्रय) में ही पैरों की रजों को यतनापूर्वक साफ कर सकते हैं।
२. उपाश्रय में उच्चारण प्रस्रवण का व्युत्सर्ग और विशोधन। आचार्य उच्चावार-प्रस्रवण प्रवास स्थल में ही कर सकते हैं। प्राचीनकाल में हम लोग पंचीमी समिति के लिए बाहर जाते थे। आजकल तो बाहर जाना कम हो गया, किन्तु बाहर जाने की व्यवस्था हो तो भी आचार्य को उच्चार प्रस्रवण के लिए बार-बार बाहर नहीं जाना चाहिए। प्रवास स्थल में उनकी शारीरिक निवृत्ति की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। बार-बार बाहर आने-जाने से उनके प्रति सम्मान की भावना कम हो सकती है।
३. सेवा करने की ऐच्छिकता। किसी साधु की सेवा की अपेक्षा हो, गोचरी लाकर देनी हो तो सामान्यतया दूसरे साधु के लिए तो सेवा करनी जरूरी होती है, किन्तु आचार्य के लिए सेवा करनी जरूरी नहीं है। वे चाहें तो किसी की सेवा कर भी सकते हैं और चाहें तो न भी करें। उनके लिए सेवा इसलिए जरूरी नहीं है कि उनका मुख्य कार्य हैं--सूत्रार्थ की वाचना देना, स्वयं ज्ञान का पारायण करना और संघ में ज्ञान को फैलाना, प्रवचन करना, व्यवस्था करना आदि।
४. एक-दो रात उपाश्रय में अकेले रहना। आचार्य यदि एकाकी साधना करना चाहें तो वे उपाश्रय में अकेले रहकर साधना कर सकते हैं, उस समय वे अन्य सभी को बाहर भेज सकते हैं।
५. एक-दो रात उपाश्रय से बाहर अकेले रहना। सामान्यतया साधु को अकेले नहीं रहना होता है, किन्तु आचार्य एक-दो रात और उससे अधिक भी उपाश्रय से बाहर अकेले रहकर अपनी साधना कर सकते हैं।

पूज्यप्रवर ने तेरापंथ प्रबोध आख्यान शृंखला के अन्तर्गत अणुव्रत गीत 'बदले युग की धारा' व प्रेक्षा गीत

'आत्मसाक्षात्कार प्रेक्षाध्यान के द्वारा' का संगान किया तथा प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान का वर्णन भी किया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी ने जनता को उत्प्रेरित किया। श्री विजयराज संकलेचा ने गीत को प्रस्तुति दी।

पुण्योदय में भी पाप न करें

२४ अक्टूबर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान ठाणं आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में अनेक प्राणी हैं, उनमें एक है मनुष्य। मनुष्य भी भिन्न-भिन्न स्तरों वाले होते हैं। कुछ मनुष्य विशिष्ट तो कुछ मध्यम और अधम स्तर वाले होते हैं। शास्त्रकार ने पांच प्रकार के ऋद्धिमान मनुष्यों का उल्लेख किया है। ऋद्धि का अर्थ है--ऐश्वर्य, संपत्ति, योग, विभूतिजन्य शक्ति। पांच ऋद्धिमान मनुष्य इस प्रकार हैं--

१. अर्हन्ता--वे ऋद्धिमान पुरुष होते हैं। उन्हें तीर्थंकर भी कहा जाता है। वे अध्यात्म जगत में सर्वोच्च व्यक्तित्व होते हैं। वे इतने आध्यात्मिक होते हैं कि उनमें राग-द्वेष, मोह, क्रोध, मान, माया, लोभ कुछ भी नहीं होता है। वे केवलज्ञानसंपन्न होते हैं। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका--इन चार तीर्थों की स्थापना करने वाले होते हैं। वे अधिकृत प्रवचनकार होते हैं। उनके बाह्य अतिशय भी होते हैं। देवता भी उनके सान्निध्य में आते हैं।
२. चक्रवर्ती--वे बहुत उच्चस्तर के व्यक्तित्व होते हैं। वे छह भू-खण्डों के अधिपति, चौदह रत्नों के अधिपति, नौ महानिधियों के स्वामी और चक्रधर होते हैं। सभी आयुधों में चक्र को सबसे अधिक बलवान माना गया है।
३. बलदेव--बलदेव वासुदेव के बड़े भाई होते हैं। वे शक्तिशाली पुरुष होते हैं। दो हजार सिंहों का बल एक अष्टापद में होता है। एक बलदेव में दस लाख अष्टापदों का बल होता है। वे मृत्यु के बाद नरक, तिर्यंच और मनुष्य गति में नहीं जाते, स्वर्ग या मोक्ष में ही जाते हैं।
४. वासुदेव--वे भी दुनिया के विशिष्ट व्यक्ति होते हैं। दो बलदेवों का बल एक वासुदेव में होता है। वे तीन खण्ड के अधिपति होते हैं। उनका भविष्य अंधकारमय होता है, अर्थात वे मरकर नरक में ही जाते हैं।
५. भावितात्मा अनगार--वे विशिष्ट और उच्चस्तर के साधु होते हैं। वे अपनी आत्मा को भावनाओं से भावित कर लेते हैं, साधना में लीन रहते हैं, विभिन्न तपस्याओं का अनुष्ठान करते हैं।

आदमी को पूर्वकृत कर्म के बल से ऋद्धियां, संपदा, ऐश्वर्य आदि प्राप्त हो सकते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि विशिष्ट स्थान पूर्व पुण्य के योग से प्राप्त होते हैं। साधु बनना पुण्य योग नहीं, क्षयोपशमभाव है। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि पुण्य का योग है तो साथ में सन्मार्ग पर भी चले। प्राचीनकाल में राजे लोग भी एक समय के बाद साधुत्व को स्वीकार कर लेते थे। साठ-सत्तर-अस्सी वर्ष की आयु आने के बाद आदमी को और अधिक धार्मिक साधना करने का प्रयत्न करना चाहिए।'

आचार्यप्रवर ने तेरापंथ प्रबोध आख्यान शृंखला के अन्तर्गत जीवनविज्ञान गीत 'विद्या के प्रांगण में अब व्यापक जीवन विज्ञान हो' का संगान कर तेरापंथ धर्मसंघ के अवदानों--आगम संपादन, पारमार्थिक शिक्षण संस्था आदि के विषय में अवगति प्रदान की। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

पांच अस्तिकायमय है दुनिया

२५ अक्टूबर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया पांच अस्तिकायों का समवाय है। इसमें पांच अस्तिकाय के सिवाय और

कुछ भी नहीं है। ये पांचों दुनिया के मूल अंग हैं। पांच अस्तिकाय इस प्रकार हैं--धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय। इन पांचों के साथ 'आस्तिकाय' शव्द जुड़ा है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है--अस्ति + काय। अस्ति का अर्थ है प्रदेश अथवा लघुतम इकाई और काय का अर्थ है--समूह। लघुतम इकाइयों अर्थात् प्रदेशों का समूह अस्तिकाय कहलाता है। दूसरी परिभाषा--अस्ति का अर्थ है--विद्यमानता, अर्थात जो हमेशा था, वर्तमान है और हमेशा रहेगा, यह अस्तिकाय है।

तीसरी परिभाषा--अस्ति का अर्थ है--ध्रौव्य। काय का अर्थ है--उत्पाद और विनाश। जो ध्रौव्य, उत्पाद और विनाश से युक्त है, वह अस्तिकाय है। काल को इसलिए अस्तिकाय नहीं कहा गया कि काल का समूह नहीं होता। अतीत चला गया और अनागत आया नहीं, इसलिए काल का समूह नहीं बन पाता।

धर्मास्तिकाय गति में सहायक तत्त्व है। यह पूरे लोक में व्याप्त है। वह जीव और पुद्गल की गति क्रिया में सहायक होता है। आदमी धर्मास्तिकाय के सहयोग से चल पाता है।

अधर्मास्तिकाय भी पूरे लोक में व्याप्त है। यह जीव और पुद्गल की स्थिरता में सहायक होता है। इसके बिना जीव और पुद्गल स्थिर नहीं रह पाते।

आकाशास्तिकाय लोक में भी व्याप्त है और अलोक में भी आकाश के दो विभाग हैं--लोकाकाश और अलोकाकाश। जहां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि पांच अस्तिकाय हैं, अथवा छह कार्य होते हैं, वह लोकाकाश और जहां केवल आकाश होता है, वह अलोकाकाश होता है।

जीवास्तिकाय में सिद्ध और संसारी सारे जीव समाहित होते हैं। पुद्गलास्तिकाय के अन्तर्गत सारे पुद्गल समाहित हैं। प्रथम तीन अस्तिकाय एकाकार हैं, जबकि जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय खण्डों में विभक्त हैं। पुद्गलास्तिकाय को छोड़कर शेष चारों अस्तिकाय अमूर्त होते हैं। उन्हें आंखों से देखा नहीं जा सकता। आंखों से ही क्या, अमूर्त पदार्थ किसी भी इन्द्रिय द्वारा गम्य नहीं हो सकते।'

पूज्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान श्रृंखला के अन्तर्गत तेरापंथ के अवदानों--समणश्रेणी, जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय तथा जैन विश्वभारती का वर्णन किया। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

दोष शुद्धि का प्रयास करें

२६ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान ठाणं आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधु-साधु की साधना में भिन्नता होती है। सारे साधु एक समान नहीं होते। साधकों में अनेक वर्ग होते हैं। कोई भी साधु छठे गुणस्थान से नीचे नहीं होता, किन्तु छठे गुणस्थान में होते हुए भी साधुओं की साधना में अन्तर होता है। कोई समिति-गुप्ति की साधना में जागरूक रहता है तो कोई अपनी अजागरूकता के कारण यदा-कदा गलतियां भी कर लेता है। इस प्रकार साधुओं की साधना में तारतम्य होता है। छोटी-मोटी गलती साधुओं से हो सकती है। निर्धारित सीमा से बड़ी गलती होने पर साधुपन जा सकता है, किन्तु छोटी गलतियों से साधुपन नहीं जाता। छोटी गलतियों का भी परिष्कार होना चाहिए।

शास्त्रकार ने साधु समुदाय को पांच भागों में बांटा है। उनकी संज्ञा है-नियंठा--निर्ग्रन्थ। नियंठा पांच बताए गए हैं--पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक। पांच प्रकार के नियंठा अर्थात पांच प्रकार के साधु होते हैं।

पुलाक नियंठा वाले साधु का चरित्र निःसार धान्यकण के समान होता है। बकुश नियंठा वाले साधु के संयम में स्थान-स्थान पर धब्बे लग जाते हैं। शरीर विभूषा आदि में रुचि लेने वाला साधु बकुश नियंठा होता है। विभूषा के फंदे में ज्यादा पड़ने वाला साधु अपनी साधना में बड़ा नुकसान कर सकता है। कुशील

नियंठा वाले साधु के चारित्र में कुछ-कुछ मलिनता आ जाती है। वह मूल गुण और उत्तरगुण में कुछ-कुछ दोष लगा लेता है। ये तीन नियंठा अवीतराग साधु हैं। निर्ग्रंथ नियंठा वीतराग होता है। वह ग्यारहवें व बारहवें गुणस्थान में पाया जाता है। स्नातक नियंठा तेरहवें व चौदहवें गुणस्थान में स्थित होता है। वह केवलज्ञानी होता है। साधु के लिए ध्यातव्य है कि उसका नियंठा निर्मलता वाला रहे। यदि कोई दोष लग जाए तो उसकी शुद्धि का प्रयास करना चाहिए।'

तेरापंथ प्रबोध आख्यान शृंखला का समापन

चतुर्मास के प्रारम्भ से शुरू हुई 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला का समापन करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' की रचना के इतिहास का वर्णन किया। आचार्यवर ने इस प्रसंग में कहा--'तेरापंथ प्रबोध एक सुन्दर ग्रंथ है। कइयों को याद होगा। शनिवार को सायं सात से आठ बजे के बीच होने वाली सामायिक में यथानुकूलता इस ग्रंथ का स्वाध्याय होना चाहिए, कोई विज्ञ व्यक्ति इसकी व्याख्या भी कर सकता है। केवल संगान के रूप में भी इसका स्वाध्याय करना अच्छा है। राजस्थानी भाषा के इस ग्रंथ का आख्यान आज संपन्न किया जा रहा है।'

कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी ने जनता को उत्प्रेरित किया।

साधना में सहायक हैं पांच निश्रा स्थान

२७ अक्टूबर। परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत ठाणं आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधु धर्म का आचरण करता है, साधना करता है, महाव्रतों का पालन करता है। उसके लिए पांच निश्रा स्थान बताए गए हैं। निश्रा स्थान अर्थात् जिनसे साधु को साधना में सहयोग मिलता है, जो साधना में सहायक, उपकारक, आलंबनभूत और आधारभूत होते हैं। पांच निश्रा स्थान इस प्रकार हैं--

१. षट्काय। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय। ये छह काय साधु की साधना में सहायक होते हैं। खान-पान आदि क्रियाओं में छह कायों में निर्जीव पुद्गल साधु के उपयोग में आते हैं। इस प्रकार छहकाय साधु के लिए पहला निश्रा स्थान होता है।
२. गण। गण में सारणा-वारणा होती है तो दोषों से बचाव हो सकता है, अपेक्षानुसार सेवा भी हो सकती है। इसलिए गण साधु के लिए निश्रा स्थान होता है।
३. राजा - यदि राजा अनुकूल हो तो साधु के लिए साधना में सहयोग मिल सकता है, अतः राजा भी साधु के लिए निश्रा स्थान होता है।
४. गृहपति- गृहस्थ। जो गृहस्थ साधु को रहने का स्थान देता है, वह गृहस्थ साधु की साधना में सहायक बनता है, वह साधु के लिए निश्रा स्थान होता है।
५. शरीर। शरीर साधना में सहायक बनता है। शरीर के बिना साधुपन कैसे पाला जा सकता है। स्वास्थ्य अनुकूल न हो तो साधना और विकास में बाधा पैदा हो सकती है। शरीर को धर्म का आद्य (आदिभूत) साधन कहा गया है।

राजा प्रदेशी आख्यान शृंखला का प्रारम्भ

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज से 'राजा प्रदेशी' आख्यान का प्रारंभ करते हुए चित्त द्वारा कुमारश्रमण केशी से प्रतिबोध प्राप्त कर बारहव्रत स्वीकार करने का वर्णन किया। आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

आज पूर्वोत्तर भारत के इन्कमटैक्स विभाग के डायरेक्टर जनरल श्री एस.के. दास ने पूज्यवर के दर्शन

कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। गत २२ अक्टूबर को पश्चिम बंगाल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री अरिजीत बनर्जी ने भी पूज्यवर के दर्शन कर मंगल संबोध प्राप्त किया।

अगले जन्म में भी साथ रहती है धर्म निधि

२८ अक्टूबर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'गृहस्थ जीवन में कई चीजों की अपेक्षा होती है। इस संदर्भ में पांच निधियां प्रज्ञप्त हैं। निधि का अर्थ है-विशिष्ट वस्तु को रखने का पात्र। गार्हस्थ्य की पांच निधियां इस प्रकार हैं--

१. पुत्र निधि- पुत्र से आदमी को सुख मिलता है। पुत्र होना अपने आप में मानसिक तुष्टि का कारण बन सकता है। पुत्र अर्थार्जन करता है तो उससे घर का कार्य चल सकता है इसलिए भी पुत्र सुखदायी हो सकता है। यदि पुत्र योग्य और विनीत है तो वह माता-पिता की सेवा भी कर सकता है, इसलिए भी पुत्र गृहस्थ जीवन की एक निधि है। पुत्र विनीत, कुशल और समझदार होता है तो बहुत बड़ी निधि हो जाता है। पुत्र है तो वंश परंपरा भी आगे चल सकती है।
२. मित्र निधि- मित्र भी गार्हस्थ्य में एक निधि होता है। मित्र अच्छा होता है तो मानसिक तनाव की स्थिति के समय उससे अपनी पीड़ा कहकर मन को हल्का किया जा सकता है तथा मित्र से कोई अच्छी सलाह भी मिल सकती है। जो मित्र शूर, विनीत और विचक्षण होता है, वह मित्र जीवन में एक निधि होता है। कल्याण की दिशा में आगे बढ़ाने वाला मित्र और भी महत्त्वपूर्ण होता है।
३. शिल्पनिधि- चित्रकला आदि का ज्ञान भी एक निधि होती है। चित्रकला आदि में निष्णातता के द्वारा जीविकोपार्जन किया जा सकता है। विद्या संपन्न व्यक्ति की ख्याति और सम्मान बढ़ सकते हैं।
४. धन निधि। गृहस्थ जीवन का एक बहुत बड़ा सहायक तत्त्व धन होता है। धन के द्वारा जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। आदमी धन का अहंकार न करे।
५. धान्य निधि। घर में अनाज अच्छा है तो उससे पोषण प्राप्त हो सकता है। शरीरयापन का मुख्य तत्त्व है अन्न। गृहस्थ के लिए अनाज भी एक निधि होती है। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि अनाज जीव-जन्तु रहित है या नहीं? अनाज को पकाते समय अनावश्यक जीव हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए।

धर्म भी एक निधि है। धन, धान्य, पुत्र आदि यहां तक रह जाएंगे, किन्तु धर्म इस जीवन के बाद भी साथ रह सकता है। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि आगे के लिए पाथेय साथ लिया या नहीं? आदमी को अग्रिम गति के लिए पाथेय को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने 'राजा प्रदेशी' आख्यान शृंखला के अन्तर्गत कुमारश्रमण केशी के श्वेताम्बिका नगरी में पदार्पण आदि का वर्णन किया। कार्यक्रम में आचार्यवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

१६वें अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समायोजन

परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में प्रेक्षा इण्टरनेशनल द्वारा समायोजित अष्टदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर के संदर्भ में कार्यक्रम में एवगेनिया पालागुता ग्रुप (इण्डोनेशिया-बाली) द्वारा मंगलभावना का संगान किया गया। रूस के कुर्गन शहर से सातवीं बार प्रेक्षाध्यान शिविर में समागत अनेस्यूकिन निकोलस तथा रूस के मॉस्को शहर से छठी बार प्रेक्षाध्यान शिविर में संभागी बनी तातियाना नोबानोका ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। काठमाण्डो-नेपाल से समागत परमेश श्रेष्ठ ने पूज्यप्रवर से मांसाहार छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया।

आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में विभिन्न देशों के व्यक्ति संभागी बने हुए हैं। प्रेक्षाध्यान के साधक ध्यान की साधना भी करें और साथ में भावक्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार

और मितभाषण की भी साधना करते रहें। प्रेक्षाध्यान को दवा मान लिया जाए तो ये पांच सूत्र पथ्य-परहेज के रूप में जाने जा सकते हैं। इनका योग रहे तो ध्यान ज्यादा कारगर हो सकता है।'

२३-३० अक्टूबर तक समायोजित १६वें अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में छह देशों के २८ व्यक्ति संभागी बने। मंत्र प्रेक्षा पर आधारित इस शिविर में बहुलतया आचार्यवर की आवाज में ओडियो रिकॉर्डिंग के द्वारा ध्यान के प्रयोग करवाए गए। आचार्यप्रवर ने स्वयं एक दिन ध्यान का प्रयोग करवाया। विभिन्न कालांशों में प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि जयकुमारजी, श्री रणजीत दूगड़, श्री के.सी. जैन, तातियाना नोबानोवा तथा अनुस्यूकिन निकोलय ने भी प्रशिक्षण दिया।

कार्यक्रम मे किडजोन के बच्चों द्वारा विभिन्न प्रस्तुतियां भी दी गईं। श्रीमती बेला दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने कहा--'बच्चों को अच्छी प्रेरणा मिलनी चाहिए। अच्छे बच्चे बड़े होकर देश की अच्छी सेवा कर सकते हैं।'

आज सीमा सुरक्षा बल के आईजी श्री हेमन्त लोहिया तथा साउथ बंगाल पुलिस के एडीजी श्री संजयसिंह ने पूज्यवर के दर्शन पर पावन पर्थदर्शन प्राप्त किया।

आत्मशुद्धि के लिए साधना करें

२६ अक्टूबर। कोलकाता महानगर चतुर्मास का अन्तिम रविवार, जनता की विराट उपस्थिति। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान ठाणं आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'पांच प्रकार का शौच बताया गया है। शुद्धि या स्वच्छता अच्छी होती है, अशुद्धि और गंदगी खराब होती है। शास्त्रकार ने पांच प्रकार के शौच बताए हैं--

१. पृथ्वी शौच - मिट्टी। हाथ गंदे हैं और बालू-मिट्टी से हाथ धो लिया जाए तो हाथ स्वच्छ हो सकते हैं।
२. जल शौच- पानी से स्नान करते हैं तो शरीर स्वच्छ हो सकता है। इस प्रकार पानी से भी शुद्धि होती है।
३. तेजः शौच- धातु का अग्नि के द्वारा शोधन हो सकता है।
४. मंत्र शौच- ग्रह दोष आदि की मंत्र आदि के द्वारा शुद्धि करने का प्रयास किया जाता है।
५. ब्रह्मशौच- ब्रह्मचर्य आदि की साधना करने वाले व्यक्ति की भी शुद्धि होती है।

ठाणं की टीका में और भी शौच बताए गए हैं, जैसे-- सत्य, तपस्या, इन्द्रियनिग्रह और सभी प्राणियों के प्रति दयाभाव।□

शरीर की सफाई द्रव्य शौच है और आत्मा की सफाई भाव शौच है। भावशौच के लिए साधना की अपेक्षा होती है। साधना से चेतना निर्मल बन सकती है। कई बार आदमी के मन में गन्दे विचार आ सकते हैं। उनके पाप से बचने के लिए आदमी को सर्वप्रथम मन में यह घोषणा करनी चाहिए कि ये विचार मेरे नहीं हैं। उसके बाद नमस्कार महामंत्र जैसे किसी पवित्र मंत्र का जप करना चाहिए। उस घोषणा और पवित्र मंत्र के जप के द्वारा बुरे विचारों से बचा जा सकता है। पवित्र मंत्र का अपना प्रभाव होता है। उससे आत्मा को लाभ मिल सकता है तथा विघ्न-बाधा का निवारण भी हो सकता है।'

कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

पूज्यप्रवर के समक्ष मोमासर निवासी स्वर्गीय शासनसेवी श्री उत्तमचन्दजी सेठिया का स्मृति ग्रन्थ 'सृजन का सारथि : उत्तमचन्द सेठिया' उनके परिजनों ने पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया। उससे पूर्व श्रीमती बिन्दु रायसोनी ने इस सन्दर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

स्वर्गीय शुभकरणजी दसानी के परिजनों द्वारा उनके जीवनवृत्त पर आधारित सीडी 'श्रीशुभ' भी लोकार्पित की गई। इस सन्दर्भ में उनकी सुपुत्री सुश्री राजप्रभा दसानी ने अपने विचार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने इस सन्दर्भ में कहा--'श्री उत्तमचन्दजी सेठियाजी से संबद्ध पुस्तक का लोकार्पण हुआ। सेठियाजी ने अपने जीवन में सेवा की। मुझे स्मरण है कि योगक्षेम वर्ष में प्रज्ञापर्व समारोह की समायोजना में उन्होंने प्रमुखता का दायित्व निभाया था।'

स्व. दसानी के विषय में पूज्यप्रवर ने कहा--'श्री शुभकरणजी दसानी को मैंने देखा भी है। जहां तक मेरा आकलन है कि एक दृष्टि से कहा जाए तो मेरे देखने में गुरुदेव के आसपास रहने वाले वे एक अद्वितीय श्रावक थे। दोनों श्रावकों की आत्माएं सर्वोच्च निर्मलता की ओर बढ़ती रहें, मंगलकामना।'

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित झारखण्ड राज्य के वित्तमंत्री श्री सरयूराय ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर स्वयं को धन्य महसूस कर रहा हूं। यह मेरा परम सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन करने और उनके सुविचार सुनने का सुअवसर मिला। आज मैं यहां आकर अपने आपको धन्य महसूस कर रहा हूं। आपका पदार्पण झारखंड की धरती पर होने वाला है। आपकी चरणरज से हमारी धरती धन्य होगी। हम आपके प्रति आभारी हैं कि आप हमें सेवा का विशिष्टतम अवसर प्रदान करेंगे। हम झारखंडवासी आपकी प्रेरणाओं से अनुप्राणित और अनुप्रेरित होने के लिए सन्नद्ध हैं। यह अवसर युगों-युगों में कभी-कभी आता है। इस अवसर से मिलने वाला लाभ हमारी धरती को और अधिक उत्कृष्ट बनाएगा। हम सभी झारखंडवासी आपके विचारों से और आशीर्वाद से लाभान्वित होकर सत्पथ पर चलने का प्रयत्न करेंगे। आपने अपने सशक्त पदों से काफी लंबी दूरियां तय की हैं तथा आने वाले समय में और भी कीर्तिमान स्थापित करेंगे।'

आज विजिलेंस आईजी श्री मानसिंह ने पूज्यवर के दर्शन कर पावन पाथेय प्राप्त किया।

मंगल भावना समारोह के प्रथम चरण में संघीय संस्थाओं द्वारा मंगल भावनाएं समर्पित

पूज्यप्रवर के कोलकाता प्रवास की संपन्नता के संदर्भ में आज के कार्यक्रम में मंगल भावना समारोह का प्रथम चरण समायोजित हुआ। कोलकाता तेरापंथ समाज से संबद्ध विभिन्न संस्थाओं द्वारा पूज्यप्रवर के चरणों में मंगलभावना अर्पण का उपक्रम रहा। इस उपक्रम के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र दूगड़, कोलकाता तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री तेजकरण बोथरा, साउथ कोलकाता तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री विजयसिंह चोरड़िया, उत्तर हावड़ा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री जतन पारख, दक्षिण हावड़ा तेरापंथी सभा के मंत्री श्री बसन्त पटावरी, उत्तर मध्य तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र संचेती, उत्तर कोलकाता तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री राजेश बैद, बाली-बेलूर तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री शुभकरण दूगड़, बेहाला तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री अशोक बैंगानी, रिसड़ा तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री केशरीचन्द सुराणा, लिलुआ तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री रणजीत सेठिया, हिन्दमोटर तेरापंथी सभा के सहमंत्री श्री प्रकाश पुगलिया, उत्तरपाड़ा तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष श्री दिलीप चोपड़ा, कोलकाता तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती बसंती बोथरा, साउथ कोलकाता तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती पुखराज सेठिया, उत्तर हावड़ा तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कंचन पारख, टालीगंज तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती अनीता सिंघी, पूर्वांचल महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती रमण पटावरी, बेहाला तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती राखी बैद, हिन्दमोटर तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती संगीता बोथरा, उत्तरपाड़ा महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम नाहटा, रिसड़ा तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मीनू लूणिया, लिलुआ तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती विमला बोथरा, मित्र परिषद के अध्यक्ष श्री प्रमोद नाहटा, पूर्वांचल तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र श्यामसुखा, कोलकाता तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री मनीष डागा, साउथ कोलकाता तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री मनीष सेठिया, दक्षिण हावड़ा तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री राजेश दूगड़, पूर्वांचल तेरापंथ युवक परिषद के श्री रतन श्यामसुखा, उत्तर हावड़ा तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री विकास श्यामसुखा,

टालीगंज तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अनंत बागरेचा, उत्तर कोलकाता तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री राकेश चोरड़िया, हिन्दमोटर तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री लूणकरण मालू, बेहाला तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री संदीप बुच्चा, कोलकाता तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष श्री अजय भंसाली, साउथ कोलकाता टीपीएफ के अध्यक्ष श्री जयचन्दलाल मालू, पूर्वांचल टीपीएफ के मंत्री श्री इन्द्रराज नाहटा, उत्तर हावड़ा टीपीएफ के अध्यक्ष श्री राकेश सिंघी, दक्षिण हावड़ा टीपीएफ के अध्यक्ष श्री गौतम दूगड़, कोलकाता अणुव्रत समिति की मंत्री श्रीमती सुनीता सेठिया, जैन कार्यवाहिनी की ओर से श्री प्रकाश सुराणा ने पूज्यचरणों में अपने श्रद्धासिक्त मंगल भावसुमन अर्पित किए। कार्यक्रम के उपरान्त अनुदानदाताओं के सम्मान समारोह के संदर्भ में समायोज्य कार्यक्रम के दौरान प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कमल दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर के समक्ष अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद आदि विभिन्न केन्द्रीय संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के लोगो (प्रतीकचिह्न) का लोकार्पण किया गया।

मासखमण तप

- हिरियूर में साध्वी लब्धिश्रीजी के सान्निध्य में आठ मासखमण तप संपन्न हुए हैं--श्रीमती सुमन नरेश तातेड़, श्रीमती संतोष सुशील सालेचा, श्रीमती अनीता अशोक बाफना, श्रीमती संगीता नरपत चौपड़ा, श्री सुशीलकुमार दुर्गचन्द सालेचा, श्रीमती पुष्पा केवलचन्द तलेसरा, श्रीमती शांतिदेवी दुर्गचन्द सालेचा, श्रीमती विनीला संजय सालेचा।
- भायन्दर में साध्वी पद्मावतीजी की सन्निधि में श्रीमती रेखा राजेन्द्र नेताणी ५७ दिन, श्री भंवरलाल सूरजमल सेमलानी ३३ दिन तथा श्री भैंरूलाल लादूराम धाकड़, श्री मीठालाल पुखराज बरलोटा व श्री उमराव रतन रांका ने मासखमण की तपस्या की है।
- पेटलावद में साध्वी प्रबलयशाजी की सन्निधि में सुश्री प्रिया, सुपुत्री-श्री राकेश पीपाड़ा ने ३४ दिन, श्रीमती पूर्णिमा तरुण माण्डोत ३४ दिन व श्रीमती प्रियंका अंकुर मेहता, श्रीमती सुषमा पंकज पटवा श्रीमती मनीषा हेमंत बोरा ने मासखमण की तपस्या की है।
- चेन्नई में साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में पांच मासखमण तप हुए हैं--श्रीमती विमला रतनलाल माण्डोत, श्रीमती भाग्यवंतीदेवी अशोकजी परमार, श्रीमती प्रेमलता दिनेशकुमार समदड़िया, श्री महावीर अमृतलाल धोका, श्रीमती लक्ष्मीदेवी बसंतीलाल पगारिया।
- गुवाहाटी में मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में पांच मासखमण तप संपन्न हुए हैं--श्री कमलसिंह माणकचन्द दुधोड़िया, श्रीमती नमिता अनिल कोठारी, श्री कमलचन्द मगनमल पटवा, श्रीमती विमलादेवी मांगीलाल डोसी, श्रीमती रतनीदेवी नेमचन्द बैद।
- कांदीवली में साध्वी अणिमाश्रीजी एवं साध्वी मंगलप्रज्ञाजी की सन्निधि में श्रीमती मीनाक्षी सुनीलकुमार धोका ३३ दिन व श्रीमती ममता मनीष चींपड़, श्री शांतिलाल भूरचन्द भंसाली, श्री रोशनलाल धनराज धींग तथा सुश्री निकिता भैंरूलाल चोरड़िया ने मासखमण की तपस्या की है।
- बीड़ में मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में पांच मासखमण तप संपन्न हुए हैं--श्रीमती ममता महेन्द्रकुमार समदड़िया, श्रीमती आशादेवी शांतिलाल सांखला, सुश्री गरिमा हेमराज समदड़िया, श्रीमती रेखादेवी इन्द्रचन्द समदड़िया ने मासखमण व श्रीमती चंदनबाला हेमराज समदड़िया ने ३३ दिन की तपस्या की है।
- जलगांव में साध्वी कैलाशवतीजी के सान्निध्य में चार मासखमण तप संपन्न हुए हैं--श्रीमती आरतीदेवी डा. सुदेश सांखला, श्रीमती सपना अमित चोरड़िया, श्रीमती बसंता जंवरीलाल भंडारी, श्रीमती मंजु हंसराज दूगड़।

- घाटकोपर में साध्वी निर्वाणश्रीजी की सन्निधि में चार मासखमण तप हुए हैं--श्रीमती सरोजदेवी भरतकुमार बड़ाला, श्री जगदीश मादरेचा, डा.अरुणा प्रकाश बोहरा, श्री नरेन्द्र सुखलाल तातेड़।
- बालोतरा में साध्वी रामकुमारीजी (लाडनूं) के सन्निधि में श्री बाबूलाल देवता ने ८७ दिन, श्रीमती आशादेवी अशोककुमार गोलेछा ने ५४ दिन, श्रीमती लूणीदेवी सालेचा ने ३५ दिन तथा श्रीमती जसोदादेवी डूंगरचन्द चोपड़ा ने ४२ दिन की तपस्या की है।
- राजनगर में मुनि सुरेशकुमारजी की सन्निधि में श्रीमती मंजुदेवी दुर्गेश कावड़िया, ३३ दिन तथा श्री गोविन्द कावड़िया, श्रीमती कैलाशदेवी ज्ञानमल मादरेचा व श्रीमती कमलादेवी शांतिलाल कोठारी ने मासखमण की तपस्या की है।
- सूरत में साध्वी मधुबालाजी के सान्निध्य में चार मासखमण तप हुए हैं--श्री विजय मोदी, श्री इन्द्रमल दलीचन्द राठोड़, श्रीमती डिंपल प्रकाश सालेचा, श्रीमती निमिषा विशाल शाह।
- शाहदरा-दिल्ली में साध्वी रविप्रभाजी की सन्निधि में श्रीमती प्रेमदेवी पुखराज तातेड़, श्रीमती सरोज निर्मल बोथरा और श्री हनुमानमल रूपचन्द सेठिया ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- इन्दोर में साध्वी कीर्तिलताजी की सन्निधि में श्री अशोक बरमेचा ने ३५ दिन, श्रीमती वीणादेवी राजकुमार बैद ने मासखमण तथा श्रीमती मंजुला विजयकुमार कांठेड़ ने ३४ दिन की तपस्या की है।
- सिवानीमंडी में साध्वी मोहनांजी (श्रीडूंगरगढ़) की सन्निधि में श्रीमती सुशीला वेदपाल तंवर, श्रीमती सरोज अनिल बंसल व श्रीमती सुनीता दिलबागराय भांभू ने मासखमण तप किया है।
- सिंधीकेला में साध्वी स्वर्णरेखाजी की सन्निधि में श्रीमती प्रेमलता शुभकरण जैन, श्रीमती रेखा विजयकुमार जैन तथा श्रीमती सरिता राजकुमार अग्रवाल ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- अहमदाबाद में साध्वी चन्दनबालाजी व साध्वी लावण्यश्रीजी के सान्निध्य में श्रीमती पुष्पादेवी विनोद बाफना, श्रीमती शांतिदेवी पारसमल संकलेचा और श्रीमती संगीतादेवी महेन्द्र संकलेचा ने मासखमण तप किया है।
- कांटाबाजी में मुनि अर्हतकुमारजी के सान्निध्य में सुमित जैन, श्री महाप्रज्ञ जैन व श्री मनमोहन जैन ने मासखमण तप किया है।
- कोयम्बत्तूर में मुनि प्रशान्तकुमारजी के सान्निध्य में श्री लालचन्द चुन्नीलाल मरोठी व श्रीमती प्रेमदेवी प्रकाशचन्द मरोठी ने मासखमण तप किया है।
- मदुरै में साध्वी प्रज्ञाश्रीजी की सन्निधि में श्रीमती पुष्पादेवी रतनलाल लोढ़ा ने ४३ दिन की तपस्या व श्रीमती अमितादेवी नेमीचन्द लोढ़ा ने मासखमण तप किया है।
- सरदारशहर में मुनि ताराचन्दजी व मुनि सुमतिकुमारजी के सान्निध्य में श्री विनोदकुमार तातेड़ ने ४१ दिन तथा श्री चंपालाल कोटेचा ने ४० दिन की तपस्या की है।
- उधना में साध्वी सोमलताजी की सन्निधि में श्री कुन्दनमल चोरड़िया ने ४१ दिन की तपस्या तथा श्रीमती मंजुदेवी किशनलाल देवड़ा ने मासखमण तप किया है।
- वापी में साध्वी सरस्वतीजी की सन्निधि में श्रीमती निर्मलादेवी रमेश कोठारी, एवं श्रीमती अंजु मनोज सेखानी ने मासखमण तप किया है।
- नोखा में साध्वी राजीमतीजी की सन्निधि में श्रीमती मंजुदेवी धर्मचन्द मरोठी ने ३५ दिन की तपस्या तथा श्री गोपाल आसकरण पारख ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- गांधीनगर में साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' की सन्निधि में श्री पूरणचन्द चंडालिया तथा श्रीमती सुनीता राजेन्द्र गांधी ने मासखमण तप किया है।
- जयपुर में मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी व साध्वी अमितप्रभाजी के सान्निध्य में श्री गौतम बरड़िया ने ५५ दिन

तथा श्रीमती निर्मलादेवी जूनीवाल ने ४२ दिन का तप संपन्न किया है।

- सिल्वर में श्रीमती प्रतिभा नवरतन सिपानी ने ३३ दिन की तपस्या तथा सुश्री ज्योति सुपुत्री श्री धनराजजी बैद ने मासखमण तप किया है।
- इरोड में मुनि ज्ञानेन्द्रकुमारजी के सान्निध्य में श्रीमती नवरतनदेवी बाबूलाल देरासरिया ने मासखमण तप किया है।
- बकानी में श्रीमती सुधा चन्द्रप्रकाश बाफना ने ३५ दिन की तपस्या संपन्न की है।
- दिल्ली में मुनि विजयकुमारजी (सुजानगढ़) के सान्निध्य में श्रीमती गवरादेवी पूनमचन्द बोथरा ने मासखमण तप किया है।
- पीतमपुरा-दिल्ली में साध्वी अशोकश्रीजी की सन्निधि में श्रीमती मीनूदेवी राकेश जैन ने मासखमण तप किया है।
- भीलवाड़ा में साध्वी कमलप्रभाजी (लाडनूं) की सन्निधि में श्री संपतमलजी डांगी ने मासखमण तप किया है।
- भुवनेश्वर में साध्वी सम्यक्प्रभाजी की सन्निधि में श्रीमती मंजुदेवी नीलकमल बैंगानी ने मासखमण तप किया है।
- पाली में मुनि विमलकुमारजी के सान्निध्य में श्रीमती मैनादेवी लाभचन्द गादिया ने ३५ दिन की तपस्या संपन्न की है।
- रतनगढ़ में मुनि जंबूकुमारजी (सरदारशहर) के सान्निध्य में श्री सुभाषकुमार बैद ने मासखमण तप किया है।
- उदयगढ़ में श्री विमलकुमार सुभाष पितलिया ने मासखमण तप किया है।
- छोटीखाटू में साध्वी विशदप्रज्ञाजी की सन्निधि में श्रीमती इचरजदेवी रामदेव जैन ने ३५ दिन की तपस्या की है।
- नागपुर में साध्वी जिनरेखाजी की सन्निधि में श्रीमती संतोषदेवी राजेन्द्र पटावरी ने मासखमण तप किया है।
- नवरंगपुरा-अहमदाबाद में मुनि सुधाकरजी के सान्निध्य में श्रीमती इन्दिरादेवी आसकरण सिंघी ने मासखमण तप किया है।
- गांधीधाम में साध्वी कनकरेखाजी की सन्निधि में श्रीमती जयाबेन हंसमुखभाई मकवाणा ने मासखमण तप किया है।
- डूंगरी में साध्वी ललितप्रभाजी की सन्निधि में श्री कुणाल राजेश दक ने मासखमण की तपस्या की है।
- टोहाना में साध्वी चन्द्रकलाजी की सन्निधि में श्री जोगीराम हरपतराय जैन ने मासखमण तप किया है।
- आदमपुरमंडी में मुनि धर्मचन्दजी के सान्निध्य में श्री सुभाष देवराज गर्ग ने मासखमण तप किया है।
- जाखलमंडी में साध्वी कुन्दनरेखाजी की सन्निधि में श्रीमती राजरानी जोगीराम जैन ने १३८ दिन की तपस्या की है।
- लाडनूं में साध्वी पावनप्रभाजी की सन्निधि में श्रीमती तारादेवी उम्मेदमल बोथरा ने मासखमण की तपस्या संपन्न की है।
- लूणकरणसर में साध्वी पानकुमारीजी'द्वितीय' की सन्निधि में सुश्री प्रेम सुपुत्री श्री खुमाणचन्द दूगड़ ने मासखमण तप किया है।
- मुम्बई में समणी चैतन्यप्रज्ञाजी की सन्निधि में श्रीमती राखी सालेचा एवं श्री जितेन्द्र सालेचा ने सजोड़े मासखमण तप संपन्न किया है।

स्मृति-संबल

- गंगाशहर निवासी कोलकाता प्रवासी श्री पानमलजी मालू (सुपुत्र-स्व.झंवरलालजी मालू) का देहावसान हो गया। सामायिक, माला, भक्तामर पाठ आदि उनका नित्यक्रम था। वे धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान देने वाले श्रावक थे। वर्षों तक साउथ कोलकाता तेरापंथी सभा के सहमंत्री के रूप में अपनी सेवाएं दीं। वर्तमान में वे 'तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान' के ट्रस्टी थे। मालू परिवार धर्मसंघ और शास्ता के प्रति समर्पित और श्रद्धाशील परिवार है।
- गंगाशहर निवासी बरपेटारोड प्रवासी श्री माणकचन्दजी बोथरा (सुपुत्र-स्व.प्रेमसुखजी बोथरा) का आकस्मिक देहावसान हो गया। वे धार्मिक संस्कारों से संपन्न श्रावक थे। धर्मसंघ में साधनारत साध्वी विभाश्रीजी उनके परिवार से संबद्ध हैं। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं उपासना का लाभ लेते थे। प्रतिदिन सामायिक और प्रवचन श्रवण उनकी दिनचर्या के अंग थे। उन्होंने बरपेटारोड तेरापंथी सभा को कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दीं। उनके निधन पर पारिवारिकजनों ने बड़े धैर्य का परिचय दिया। आर्तध्यान से विरत रहकर 'ऊं भिक्षु' का जप एवं सामूहिक सामायिक का प्रयोग किया। बोथरा परिवार संस्कारी और निष्ठाशील है।
- लाडनूं निवासी श्रीमती उमराव लूंकड़ (धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्रसिंह लूंकड) का संथारे में स्वर्गवास हो गया। वे धर्मपरायण श्राविका थीं। उन्होंने तेरापंथ महिला मंडल दिल्ली को अनेक पदों पर रहकर अपनी सेवाएं दीं। धर्मसंघ में साधनारत साध्वी केसरजी एवं साध्वी गणेशांजी उनके परिवार से संबद्ध साध्वियां हैं। श्रावक के तीसरे मनोरथ की सपूंर्ति में वहां उपस्थित चारित्रात्माओं का अन्तिम समय में उन्हें अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। गंगाशहर का लूंकड परिवार धर्मसंघ के प्रति समर्पित और आस्थाशील परिवार है।
- मोमासर निवासी जयपुर-जोधपुर प्रवासी श्री बच्छराजजी सेठिया का देहावसान हो गया। वे महासभा के पूर्व अध्यक्ष शासनसेवी स्व.उत्तमचन्दजी सेठिया के अनुज थे। समता, सादगी और मिलनसारिता जैसे गुणों से संपन्न सेठियाजी प्रायः प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं उपासना का लाभ लेते थे। हृदय की बाईपास सर्जरी भी उनके इस क्रम में अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकी। प्रतिदिन छह-सात सामायिक और एक प्रहर मौन उनका नित्यक्रम था। पूज्यप्रवर द्वारा उन्हें 'कल्याणमित्र' का संबोधन प्राप्त था। भीलवाड़ा जिले के विनयपुरम ग्राम में स्थित शिक्षण संस्था के वे संस्थापक थे। मोमासर का सेठिया परिवार दीर्घकाल से गुरुदृष्टि की आराधना एवं संघसेवा में संलग्न है।
- सुजानगढ़ निवासी श्री जंवरीमलजी डोसी का आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने संयमित, संतुलित, अनुशासित और अध्यात्ममय जीवन जीया। वे धर्मसंघ और संघपति के प्रति अनन्य निष्ठाशील श्रावक थे। सुजानगढ़ के संघीय और सामाजिक कार्यों में वे अग्रणी के रूप में अपनी सेवाएं देते थे। वहां के सामाजिक दायित्वों को उन्होंने बड़ी कुशलता से निर्वहन किया और अनेक सामाजिक विवादों के निपटारे में अच्छी भूमिका निभाई। पूरा डोसी परिवार समर्पित और श्रद्धाशील परिवार है।
- जोजावर निवासी हैदराबाद प्रवासी श्रीमती चन्द्राबाई बम्बोली (धर्मपत्नी-श्री भंवरलालजी बम्बोली) का निधन हो गया। वे प्रतिदिन छह से आठ सामायिक करने वाली देव, गुरु, धर्म के प्रति सर्वात्मना समर्पित श्राविका थीं। अपना अधिकांश समय त्याग-प्रत्याख्यान में व्यतीत करती थीं। उन्होंने अपने जीवन में तेरह तक की लड़ी, ग्यारह अठाई, एक मासखमण और दो वर्षीतप की तपस्याएं कीं। गुवाहाटी चतुर्मास तक प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं उपासना के संकल्प को पूरा किया। परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की सेवा के साथ पूरे परिवार को धर्म के गहरे संस्कार दिए। अन्तिम वर्षों में वे असाध्य बीमारी से ग्रस्त हुईं और वेदना को समभाव से सहन किया। बम्बोली परिवार समर्पित और संघसेवा में तत्पर है।
- गंगाशहर निवासी, पंचकुला-चंडीगढ़ प्रवसी श्री भींवराजजी सेठिया (सुपुत्र-स्व.रूपचन्दजी सेठिया) का

निधन हो गया। वे दृढ़निश्चयी, संघ और शास्ता के प्रति समर्पित व्यसनमुक्त श्रावक थे। प्रतिवर्ष गुरुकुलवास में पन्द्रह दिन तक सेवा-उपासना का लाभ लेते थे। अपने परिवार को धार्मिक संस्कारों से युक्त कर एकता के सूत्र में आबद्ध किया। वर्तमान में वे अपनी चार पीढ़ी के सदस्यों के साथ प्रेमभाव से धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहे थे। पूरा सेठिया परिवार धर्मसंघ की सेवा में संलग्न है।

- आमेट निवासी विक्रोली-मुम्बई प्रवासी श्री मदनलालजी लोढ़ा (सुपुत्र-श्री भंवरलालजी लोढ़ा) का देहावसान हो गया। वे प्रतिदिन सामायिक एवं रात्रि भोजन का परिहार रखने वाले बारहव्रती श्रावक थे। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं उपासना का लाभ लेते थे। युवावस्था से ही वे धर्मसंघ और संस्थाओं की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने लगे थे। विक्रोली (मुम्बई) तेरापंथ युवक परिषद की स्थापना में योगदान देकर उसके प्रथम अध्यक्ष के रूप में तथा आचार्यश्री महाप्रज्ञ के मुम्बई प्रवास के दौरान भी उन्होंने अनेक रूपों में अपनी सेवाएं दीं। अन्तिम वर्षों में किडनी की बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद चारित्रात्माओं की सेवा में तत्पर रहे। पूरे लोढ़ा परिवार में धर्म के गहरे संस्कार हैं।
- गंगाशहर निवासी सिल्चर प्रवासी श्रीमती फूसीदेवी डागा (धर्मपत्नी-स्व.श्री राजकरणजी डागा) का देहावसान हो गया। वे सरलस्वभावी, ऋजुभाषी एवं ममतामय व्यक्तित्व वाली बारहव्रती श्राविका थीं। संसारपक्ष में वे साध्वी ज्योत्सनाकुमारीजी की मां थीं। अल्पायु से ही उन्हें रात्रि भोजन एवं जमीकन्द का परिहार था। उनके पिछले पांच-छह वर्षों से पांच सामायिक का क्रम था। पूरे डागा परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/-स्व.श्रीमती झमकूदेवी पारख (चूरू-चेन्नई) की पुण्यस्मृति में उनके पति श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री सुमेरमल, पुत्रवधू लता व सुपौत्र दक्ष पारख द्वारा प्रदत्त।

५१००/-शासनसेवी स्व.उत्तमचन्दजी सेठिया (मोमासर-जयपुर-कोलकाता) के स्मृति ग्रंथ 'सृजन का सारथी' के लोकार्पण के उपलक्ष्य में अनुकंपा फाउण्डेशन, बेंगलुरु-कोलकाता द्वारा प्रदत्त।

३१००/-स्व. धनराजजी सेमलानी (चाणोद-सिमोगा) की पुण्यस्मृति में सेमलानी परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व.पुसालालजी आंचलिया (पादूकलां-सिरकाली-चेन्नई-दिल्ली) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र संपतराज, ताराचन्द, ज्ञानचन्द आंचलिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/-महादानी श्रावक श्री कमलसिंहजी दूगड़ व महादानी श्राविका श्रीमती सूरजकिरण दूगड़, लाडनूं निवासी सूरत प्रवासी द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व.श्री छतरसिंहजी बोथरा (चूरू-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मौसमीदेवी सुपुत्र अशोक, प्रदीप बोथरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चिताम्बा, जि. भीलवाड़ा (राजस्थान) द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-०७३८४४३६५७२, ०९७८४४०७४६१

दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ९३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी